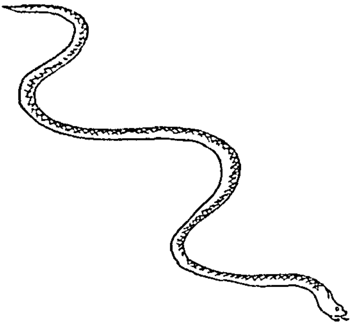
साँप तो साँप ही होता है



—आरसी शर्मा

☐ अरुण शर्मा
साँप तो साँप ही होता है
मूल्य : एक सौ पचास रुपये

प्रकाशन
वेनगार्ड पब्लिकेशन
सूरतसिंह की कोठी, सोजती गेट
जोधपुर – 342 001
मुद्रण : राजस्थान प्रिन्टर्स, सोजती गेट जोधपुर – 342 001

SANP TO SANP HI HOTA HAI (Poems)
ARUN SHARMA
Price Rs. 150

महाभारत

To steal a flower we call mean,

To rob a field is chivalry;

Who kills the body he must die,

Who kills the spirit he goes free'

—Khalil Gibran
(The Procession of Justice),

गरीब की झोंपड़ी मे धुँआ चुनौती की तरह उठता है
कुचली जाती मिट्टी से एक सुन्दर चेहरा बनता है
जंगल में खो गये तालाब की भाप से बादल बनता है
अनाम सिपाही का जख्म युद्ध को निर्णायक मोड़ देता है
बेसहारा औरत की कोख से लड़ाका पैदा होता है

—देवी प्रसाद मिश्र (नाता)

इन सदियों की ये सब वो बातें हैं जो हर रोज एक गम्भीर ठिठुरती खामोशी के दौरान सुनीं. ये बातें उन्हीं की ओर से कही गई हैं जिन्होंने ये सारी बाते कहीं.

सारी रचनायें परिवेश से ही उत्पन्न हुई हैं फिर भी व्यक्तिगत हैं क्योंकि ये अलग अलग व्यक्तियों की अलग अलग बातें हैं. क्योंकि व्यक्ति समाज की इकाई है इसलिये इन बातों में समाज स्वयं समाहित है, उन सब द्वन्दों से लथपथ जिनसे समाज के मूल्यों का हर प्रकार से हनन् हो रहा हैं. ये उसका खुला चिठ्ठा है.

ये आज के परिवेश का यथार्थ है जो हमें बेचैन करता है, पीड़ा पहुँचाता है और बहुत सारे प्रश्न उठाता है जिसमें एक सवाल अहम हो जाता है कि ये सब द्वन्द क्यों और कब तक ? यह स्वअनुत्तरित एक प्रश्न रहेगा. लेकिन हर प्रश्न का गहराई में उत्तर होता है, केवल खोज की ललक और श्रम साधना अपेक्षित है. शैतान कभी नहीं सोता, यह स्व अनन्त कथ्य कहानी है जिसकी शाश्वतता में ही सफलता है. इस कड़वे सच को भी पीते रहना होगा.

एक विस्तृत समय-संवेदना हमें झकझोरती है और हर संवेदनशील व्यक्ति को ऐसी स्थितियों से टकराने के लिये एक जुट हो सदल ललकारती हैं कि न गलत करेंगे न गलत होने देंगे.

मुश्किल ये है कि स्वार्थबोध को जीने वाली ये उपयोगितावादी सभ्यता व्यक्ति द्वारा व्यक्ति के अधिकारों का बलात्कार करने को उकसाती हैं और हर व्यक्ति की आदमीयता को तहस–नहस करने को तत्पर करती हैं—एक monochromatic तिक्त melancholia से भरती है.

इसका विरोध करना हर उस संवेदनशील व्यक्ति का कर्त्तव्य है जो सौन्दर्यबोध को जीता है और व्यक्ति की अस्मिता को स्वतन्त्रता और उसके सम्मान की पूजा करता है.

संकलित रचनाये बेचैन मन की अभिव्यक्ति हैं—बिना किसी लागलपेट के, बिना अलंकारों के, बिना मुखौटों के सीधी सपाट खबरों

के रूप में प्रस्तुत हैं. कई तो protagonist स्वयं ही कह रहा है.

बात पर जैसे भी संप्रेषित हुई हो, परिवेश के प्रति जागरूक है और सामाजिक यथार्थ की चेतना लिये है. सेसिल डे लुइस ने कहा भी था—"कविता यथार्थ की संवेदना और सहयोग प्रदान करने का एक मार्ग है"

सुश्रुत की शल्य चिकित्सा भले ही प्रारम्भ में संत्रस्त करती हो, शल्योपरान्त फोड़े के फूटने सी राहत मिलती है, नवजीवन मिलता है. इस संग्रह का कड़वापन इस तरह का है.

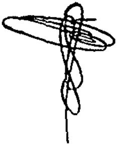
अरुण शर्मा
आबू पर्वत
1995

अनुक्रम

१ शब्द

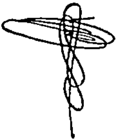
शब्द
जब तक बोलेगा
होता रहेगा
खोखला.

शब्द
जब सुनेगा
स्वयं को,
खालीपन उसका
लगेगा भरने
स्वयं को,
और तब वो
हो जायेगा
सम्पूर्ण
जब सुनेगा
पूर्णतः
स्वयं को.



२ परिवर्तन

भर लिया है
काट–काट
वन को
हमने
स्वयं में
और हम
हो गये हैं
वनैले
और
सारे खूंखार
पशु
वनैले
हो गये है
पालतू.



३ बात भीड़ और खेमों की

ऊर्ध्वबाहुर्विरोम्येष न कश्चिद् शृणोति मे ।
धर्माद् अर्थश्च कामश्च स किमर्थं न सेव्यते ।।

महाभारत

और जब उसने
खुद को पाया अकेला
तो उसने चारों ओर
बारी-बारी से
एक जल्दी में
गर्दन घुमा देखा
और मूंद आंखें
बिन सोचे कुछ
दौड़ पड़ा वह.

विचार था यही
कि
किसी भी
खेमे में होना
कहीं तो
होता है होना
और
भीड़ में होना
केवल होता है खोना.

जिसे वो
समझा था
खेमा
वो भी
एक टुकड़ा
भीड़ थी
जिसमें खो
बन गया एक
विस्मृति वो.

४ है जो हमारे अन्दर

है जो हमारे अन्दर
एक वहशी जंगल
उसमें होता रहता है
एक ताण्डव खूनी
जिसके चारों तरफ
सजाते हैं हम
जिन्दगी एक सूनी
जिसके सूनेपन में
थरथराते हम
डरते है
डर डर के
छुपते रहते हैं
उस ताण्डव से
जो होता है
उस वहशी जंगल में
है जो हमारे अन्दर.

खौफ तब
हो जाता है
और विकराल
काल अकाल
होता है जब सामना
उस जंगल का
है जो हमारे अन्दर.

उस जंगल को
है जो हमारे अन्दर
आओ
उसे हम जला दें
और पा लें
उसके सूनेपन में
अपना
शान्त
एकान्त.

५ अनबुझ दर्द सा

लड़की
आपकी बेटी हो
हो मेरी बहन
हो जो भी
अचानक
पहुंच एक मोड़ पर
विस्मित पाती है
कि उसे
दिलचस्पी हो गई है
रंगों में
कपड़ों में
फूलों में
जिन्दगी के
रंगों में
हो गई है दिलचस्पी
और सब घबराने लगते हैं
कि ये उसे
हो क्या गया है
कि गुमसुम
शून्य की ओर
निश्चल
ऊबती नहीं है
ताकती
जब कि हर आंख
उसमें झांकती
ढूंढना चाहती है
उस लड़की को
जिसके
सारे जीवन की

निगरानी का ठेका
उसने स्वत: लिया है
और वो लड़की
इन्तजार करती
अपनी मौत का
डरती रहती है
अपने से
अपनों से
उम्र से
उम्र के सारे सपनों से
जिनमें
हर सांस साथ
रहता है उपस्थित
नीले घोड़े पर सवार
एक देवता
हवा से बातें करता
मिथक सा
देह में खोये
अनबुझ दर्द सा.

६ औरतें स्वेटर बुनती हैं

औरतें
स्वेटर बुनती हैं
अकेली या महफिल में
स्वेटर बुनती हैं
पिकनिक को जाती
पिकनिक से आती
स्वेटर बुनती हैं
बच्चे को दूध पिलाती
पति को खाना खिलाती
स्वेटर बुनती हैं
टी० वी० देखते
कथा सुनते
स्वेटर बुनती हैं
बस में, ट्रेन में
घर के अंधेरों में
बगीचों की धूप में
स्वेटर बुनती है
प्रेम में तपते
घृणा से जलते
स्वेटर बुनती है;

उनकी ऊंगलियों को जैसे
अनिवार्य हो
ऊन और सलाइयां
अस्तित्व के लिये
इसलिये वे
निरन्तर बुनती हैं
अपने अस्तित्व को
जो उघड़ता रहता है
उन सब पलों मे
जब वे स्वेटर बुनती है
और उन पलों में भी
जब वे स्वेटर नही बुनती हैं.

७ और फिर और फिर

और फिर
और फिर
हाहाकार की हुई हार
और हर चीत्कार
हो लाचार
जैसे सदा के लिये
मौन हो गई
गूंज खाली
बंदूकों की रह गई
और सहमा देखता रहा
ध्येननमान स्क्वायर
गुर्निका के
उस घायल सिपाही को
जो हाथ में बंदूक थामे
घायल पड़ा पड़ा, रेंगता
प्रयास कर रहा था छूने का
सामने पड़े
गुलाब को.

८ वो लड़की

वो लड़की
अब बस
रोती है
दिन भर,
जागी हुई
सोती है
दिन भर
और रातों
सोने के लिये
नींद की गोलियों म
नींद ढूंढती है
जहां खड़ी हैं
वो सब यादें
जिन्हें उसने
याद किया नहीं कभी
फिर भी
आज भूलाने पर भी
भुलाई जाती नहीं.

१ साँप तो साँप ही होते हैं

छत
दीवारें
फर्श
दर्पण ही दर्पण
खुद के हर ओर
करता है वो
दर्शन ही दर्शन
ऐसा है उसका जगहीन
उसका सोच ही
जगाता है घिन.

उसका चातुर्य
उसे बना देता है
सबल कौन है
जिसका वो पक्ष लेता है.

बड़ी चालाकी से
वो अपनी नाव खेता है.

वो जानता है
रोटी के किस ओर
घी होता है,

मानो
मॉम्बा, जिसने तुम्हें
काटा न हो अभी तक
वो खरगोश तो नहीं होता है–
आखिर भाई
सांप तो सांप ही होता है.

१० बदबू ही पसंद है

हमें अब बस
बदबू ही पसंद है

जहां बदबू है
हम
उसी डगर पर जाते हैं.

जिसमें बदबू है
हम उसी खबर को
सुनते है, सुनाते है.

जिस भजन में बदबू है
हम उसी को
गाते हैं
गुनगुनाते है.

हमारी निरन्तर खोज
तेज से तेजतर
बदबू की है,

जिसके अभाव में
हम बिन सींचे फूल-सा
मुर्झा जाते हैं.

हमें अब बस
बदबू ही पसंद है.

११ कुत्ते

कुत्ते कई प्रकार के होते है—
कुछ समझदार होते हैं
कुछ खूंखार होते है
कुछ वफादार होते हैं,

सच, कुत्ते कई प्रकार के होते हैं
कुछ हाथी के पीछे भौंकते हैं
कुछ बैलगाडी के नीचे दौड़ते हैं
कुछ अपनी गली में शेर होते हैं.

वास्तव मे कुत्ते कई प्रकार के होते हैं—
पर वो कुत्ते
जो दुम हिलाते है
वो ही विख्यात होते हैं.

पर कुत्ते
कितने ही प्रकार के
क्यों न हो,
मजे की बात तो ये है
कि
सभी कुत्ते
टांग उठाकर
मूतते है
और
अपनी जात बताने के लिये
टके की हांडी
फोड़ते है.

वास्तव में कुत्ते कई प्रकार के होते है.
खैर,
कुत्ते
कितने हो प्रकार के होते हों
इससे हमे क्या लेना देना
हमें तो बस इतना है कहना
कि जो कुत्ते होते हैं
वे कुत्ते की मौत मरते है.

१२ विस्मय की बात

दुलार के
पुचकार के
ढेरों
मनुहार से
उसने मुझे
चाय नाश्ते पर बुलाया
और आतिथ्य धर्म
अक्षरश: निभाया
कि इतना खिलाया
कि इतना खिलाया
कि मैं भूल ही गया
कि मैं किसी गैर के यहां था
कि तभी मैं
धड़ाम से
विस्मय सहित
मुंह के बल गिरा
जब उसने विदाई पर
बहुत शालीनता से
चाय नाश्ते का बिल पेश किया.

समझदार लोग
अभी भी कहते है
कि विस्मय इसका नही
कि उसने
चाय नाश्ते का बिल पेश किया
पर विस्मय तो इसका है
कि
बिल पेश करने पर
मुझे विस्मय हुआ.

१३ बैसाखियाँ उन्हें चाहिये

बैसाखियां
उन्हें चाहिये
जिनकी टांग नहीं
उन्हें नहीं
जिनके
पैर सलामत है
है सही.

अन्यथा
बैसाखियां
कर सकती है विकृत
चाल
पैर वालों की
जो
गिर भी सकते हैं
बैसाखियों के होते हुए भी.

बैसाखियां
उन्हें चाहिये
जिनकी टांग नही
उन्हें नहीं
जिनके
पैर सलामत हैं
है सही.

१४ एक और डर

वो
निरन्तर
एक
हलचल
रचता है

उसमें
रंग रंग का
कोलाहल
भरता है

क्योंकि
वो
अपने
मौन का
सामना करने से
डरता है.

वो
निरन्तर
एक
हलचल
रचता है.

१५ कठोर चट्टान भी

कठोर चट्टान भी
प्रतिउत्तर में
लौटाती है
प्रतिध्वनि
फिर वो दिल
कितना होगा निर्जीव
जहां
हर ध्वनि मर जाती है
जहां से
कोई प्रतिध्वनि नही आती है.



१६ डर वो नहीं रहे

Human chain in Chechnya
(Associated Press-Grozny Dec. 21, 1994)

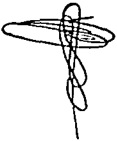
डर वो नहीं रहे
जिन्होने
मानवश्रृंखला
बनाई है
पर
डर तो
वो रहे हैं
जिन्होने
उस श्रृंखला के खिलाफ
बन्दूकें
उठाई हैं —

वैसे ही निर्भीक
सारी पृथ्वी पर
पेड़ों से खड़े हैं
अलग अलग
दूर दूर
पर जमीन के नीचे
उनकी जड़ें
एक दूसरे से जुड़ी
जकड़ी
फैली हैं,
उन्ही के कारण
जमीन
आज भी
हरी भरी है
फूली फली है.

१७ मूंगफली की और ही है बात

बदाम
ताजे हों
या भुने
सिके हों
या तले
नमकीन हों
या सादे
कभी भी
मुंह कड़ुवा कर सकते हैं

पर
मूंगफली की और ही है बात
ऐसा कोई डर नहीं उसके साथ.



But I assure you there 'll be
hell to pay
You cant fool around with
the tax payer's urine. –Keki N. Daruwalla

कहते है
टाइम पास करने के लिये
खाते रहना मूंगफली
छील छील
या
छील छील
करते रहना
चर्चा परिचर्चा
सेहत के लिये
होता है अच्छा.

कहते हैं
जो पुल
कभी बना ही नहीं
उसका उद्‌घाटन
मन्त्री जी ने
कल किया
और कहते हैं
जो खसरा था ही नहीं
उसका मुआवजा
दोस्त की बेवा को
कलैक्टर साहब ने दिलवा दिया
और ये भी कहते है
कि
राहत कार्य के अन्तर्गत
जो झील बन रही थी
उसके अनुदान से

सभी ग्रधिकारियों के
घर वन गये
ग्रौर
झील को
लील गई
कमिश्नर साहब की उदारता
जिसके कारण
वे ग्राज
मुख्य सचिव
बन गये हैं.

कहते हैं
जब भी लगे हाजत
कहीं भी
हो जाइये फारिग
कहीं भी
ग्रौर इसके लिये
किसी से भी पूछिये
पेशाब घर का पता
तो वो
तपाक से देगा बता
कि
पूरा देश ही पेशाब घर है.

कहते हैं
टाइम पास करने के लिये
खाते रहना मूंगफली
छील छील
या
छील छील
करते रहना
चर्चा परिचर्चा
सेहत के लिये
होता है ग्रच्छा.

१९ भीड़ से होते हुए

भीड़ से होते हुए
भीड़ से
भीड़ में
आना जाना
और उस दौर में
किसी को भी जब
साथ न पाना
तो
बेबस
ढूंढ
किसी का भी
साथ पाना
और फिर
उस साथ की
सारी की सारी
शर्तों पर ही
भीड़ से होते हुए
भीड़ से
भीड़ में
आना जाना
फिर भी
अपना
अकेलापन
मिटा न पाना
बस होता है
बनाये रखना
भीड़ से होते हुए
भीड़ से
भीड़ में

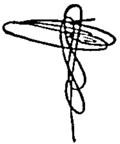
आना जाना
साथ बदलते हुए
कपड़ों की तरह
और डरते हुए
अकेलेपन के खौफ से
जिस खौफ को
भीड़ में खोये
किसी भी
अकेले ने
कभी नही पहचाना
वो तो बस
ढूंढता रहा बहाना
जिससे रुके नही उसका
कभी भी
कहीं भी
भीड़ से होते हुए
भीड़ से
भीड़ में
आना जाना.

२० कलाकृति छुपी

टुकड़ा
काठ का हो
संगमरमर का हो
या हो
हाथी दांत का
या किसी चट्टान का
शिल्पी
उसे तराश
ढूंढ ही लाता है
उसमें से
कलाकृति छिपी

जिन्दगी भी
किसी विराट का
टुकड़ा है
उसमें एक
कलाकृति छिपी
प्रतीक्षारत रहती है
किसी शिल्पी के
हाथों के
जादू को
सदा
और यदा कदा
कोई जिन्दगी
किसी जादुई पारस से
अद्‌भुत
कलाकृति बन जाती है
जैसे
जंगल में

कोई
महकता फूल हो
या
किसी प्रान्तर में
कुलेल करती
कोई
कूक हो
या फिर
किसी सीप के
मोती में चमकती
धूप हो.



२१ सीजर तुम्हें मालूम नहीं

सीजर तुम्हें मालूम नहीं
कायर ही नहीं
प्रेमी भी
अपनी मौत के पहले
कई बार मरते हैं
पर वे
कायर की तरह
मौत से
डरते नहीं,

जीते रहते हैं
मौत को,
तिल तिल मरते
क्यों कि
वे
एक दूसरे से प्यार करते हैं
मौत से वे कहाँ डरते हैं.



२२ आप के पास

और
जैसे ही
युधिष्ठिर
गुजरे नरक में
झुलसते सभी अभिशप्तों ने
महसूस किया
शीतल बयार का झोंका एक

वैसी ही बयार
मैं तब तक पीता हूँ
जीता हूँ
जब होता हूँ
आप के पास
और
नारकीय जीवन
हो जाता है सहज
उन पलों में
जब होता हूँ
आप के पास
और झुलसता
पा जाता हूँ
पछुआ फुहार
आप के पास
और उन पलों में
भूल जाता हूँ
जीवन का
सारा त्रास
आपके पास.

२३ बादाम तो दिये

बादाम तो दिये
पर दिये उसने
सारे के सारे
कड़ुवे.

कैसे कोई
उन्हें खाता
कैसे भी
एक भी बादाम
किसी को भाता—

कड़ुवाहट से
हर एक का मुंह
विकृत हो गया था
और एक सुन्दर अनुष्ठान
किस कदर
विरूपित होगया था

अच्छा तो ये होता
वो किसी को
बादाम ही नहीं देता
कम से कम
किसी का भी
खामोखाम
मुंह कड़ुवा तो न होता.

२४ धूप यहाँ

धूप यहां
चट्टानों पर
तपती
झुलस जाती है;

जैसे
चगापों की
पो पों में
हर जवानी
बिखर जाती है.

और
ठिठुरती
रह जाती हैं
सर्द चट्टानें
लिये गंधाती
शराब से सड़ती घास,
कभी भी
तृप्त न होने वाली
गाँजे के
धुँए में
शुष्क होती
हर एक प्यास.

२५ सचतों ये है कि

उसका कहना है
कि
उसने तबादला
इसलिये नहीं लिया
क्योंकि
उसकी शाखा के
चपरासी ने
हरिजन की
पत्नी के साथ
उसे उसके बेडरूम में
रंगे हाथ पकड़ा
पर शहर
उसने इसलिये छोड़ा
क्यों कि उसे
शक् हो गया था थोड़ा थोड़ा
कि उसकी बीवी को
(जिसके साथ उसने
लोग कहते हैं
प्रेम विवाह किया था)
मुझ से
प्रेम हो गया था
ये उसे कतई
बर्दाश्त नहीं था.

यही बात कही
एक और ने भी
जो
पत्नी को किसी की
भगा ले गया था

और
पुलिस के पीछे लगने पर
उसे अधर में छोड़
अपनी चमड़ी बचाने के लिये
इधर उधर भागता फिरा
जब तक उसकी पत्नी ने ही
रुपये दे
उसपर की गई एफ. आई. आर को
रफा-दफा नहीं कराया

उस देवी के लिये भी
उसने कहा यही कि
उसे भी
मुझ से
प्रेम हो गया था
इसलिये वो
किसी दूसरे शहर में
धन्धा करना चाहता था.

इस प्रकार
ऐसे लोगों ने
मेरी मर्दानगी को
कर दिया विख्यात
स्वयं को
क्लीन
कर दिया करार
और
अपने साथ साथ
देवी सी
पत्नियों का
जीवन
कर दिया बरबाद.

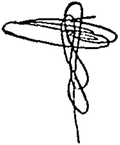
अब
सब
कहते हैं कि
सच तो ये है कि
ऐसे जितने भी हैं
पत्नियां उनकी
उनकी कभी
कही थी ही नहीं
क्यों कि वे भी
कभी भी
अपनी पत्नियों के
बने ही नहीं
कारण कि उन्हें शक था
उनके 'जॉकी' के अन्दर
कुछ था ही नहीं
इसलिये अब
ऐसे सभी
ये समझाने में लगे हैं
कि वे कितने मर्द हैं
पर
इस प्रयास में
वे बन गये है
घर से निकाले
धोबी के कुत्ते.

सारे दिन
दुम दबाये
शहर भर में
भटकते फिरते हैं
और
रात जब

सब सो जाते हैं
तब
ये
चुपके से
घर में आते हैं
और
दुबक किसी कोने में
सो जाते हैं
सुबह का इन्तजार करते
जिसके होते ही
चुपके से
निकल जाते हैं
दुम दबाये.

२६ ये भी एक कारण है

जिसने भी बनाया
किसी भी होटल को
मदन का अखाड़ा
उसकी मर्दानगी ने ही
उसे ही वहां
सदा पछाड़ा
शायद
ये भी एक कारण है
कि
शहर में कितने ही आने वालों ने
शहर में न आकर
सभी के साथ
शहर को भी है लताड़ा



२७ जय जय जय जय प्रजातन्त्र

कृष्ण कंस से नजर चुरा रहे हैं
राम रावण चालीसा सुना रहे है
सुदामा महल बना रहे हैं
कुबेर सूखे पत्ते खा रहे हैं
तस्कर कानून बना रहे हैं
डाकू खजाना चला रहे हैं
अंधे चौकीदारी कर रहे हैं
लंगड़े हलकारे बन रहे है
और जो कभी पढ़ने गये ही नही
वो अनपढ़, पढ़ों को पढा रहे हैं
धर्मगुरु चकले चला रहे हैं
नगर वधुओं को नाथवति बना रहे हैं
लम्पट आदर्श पति कहला रहे हैं
पतित पापी पुरस्कार पा रहे हैं
शराब का चरणामृत पिला रहे हैं
ठाकुर घर में विष्ठा चढा रहे हैं
अंधे पीस रहे है कुत्ते खा रहे है
और सभी खलवन्दना गा रहे हैं

जय जय जय जय प्रजातन्त्र
गुण पर राज करे है कलंक
जय जय जय जय प्रजातन्त्र

२८ सबसे सुन्दर कविता

अपने डाक्टर के चेम्बर में
कई कवितायें सुनी मैंने
पर
सबसे सुन्दर कविता
वो निदान था
जिसके बाद
उस किशोरी वधू के चेहरे पर
खोई
किशोर मुस्कान की किशोर आभा
लौट आई
और
छलकने लगी थी उसके
यौवन की लोनाई
सुप्त मातृत्व की नदी उसकी
अंगड़ाती गदराई
और उसके विश्वास की सांसें
हौले से गुनगुनाई
सबसे सुन्दर कविता
वो,
जो
छोड़ मुझे
किसी और को तो क्या
स्वयं कवि को भी
पड़ी नहीं सुनाई.

२९ कुछ बात बेबाक शराब पीने के बाद

विश्वासघात
उसी से तो होगा
जो
विश्वास करेगा

डराया तो
उसे ही जायेगा
जो
डरेगा

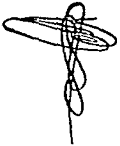
उसी से लोग
काम लेंगे
जो
काम करेगा

जिसकी साँसे
उखड़ रही हैं
उस पर
तभी तो रोयेंगे
जब वो मरेगा



३० जात नहीं पूछती

हवा
किसी सांस से
वर्षा
किसी प्यास से
प्रार्थना
किसी ग्रास से
कभी उसकी
जात नहीं पूछती



३१ मतदाता पिटा

फिर
चुनाव आ गये
फिर
शराब वही
फिर
धन लुटा
और
जिसको जीतना था
वो जीता
पर
पिटा
तो बस
मतदाता पिटा



३२· साँसें गुनगुनाती हैं

कितनी ही
कृश धारायें मिल
नदी बनाती हैं
कितनी ही
तन्वी किरणें मिल
आलोक सजाती हैं
कितने ही
कोमल स्वरों को सजा
साँसें गुनगुनाती हैं



३३ फूल खिला नहीं

तुम्हारे
माफी मांगने से
मेरा दर्द तो
कम हुआ नहीं

निज
दोपात्मा से
ऋण पाने के लिये
तुमने मुझ पर
उदारता की
पर उससे
मेरा मिटा मान तो
मुझे पुन. मिला नहीं

डाली को तुमने
गुलदस्ते में
सजाया तो सही
पर उसमें कभी
फूल खिला नहीं

३४ सुन्दर चीजें सारी

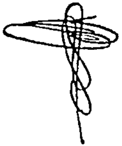
सुन्दर चीजें सारी
सहजता से
मिलती हैं सदा

जैसे

दुलार

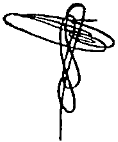
बहार

फुहार.



३५ हम जिन्दा रहें

शायर ने
कुछ
सोच कर ही कहा होगा
कि
हम है तो खुदा भी है,
चलो
किसी और के लिये नहीं
खुदा के लिये ही सही
हम जिन्दा रहें

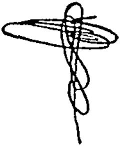


३६ प्यार वही करते हैं

सम पंखो के पारखी
संग संग उड़ते हैं

जीत वहीं होती है
जहां वहुवल जुटते हैं

पर प्यार वही करते हैं
जो प्यार में लुटते हैं



३७ एक नशीला सिलसिला

जब जब मिलो
पौत्र हमिला
यही पाया
सिलसिला
कि वो
लिये चेहरा
खिलाखिला
तन्मय सदा
अँगूठा चूसते
नैन मूँदे
चौखट पर
सर धरे खड़ी
अल्हड़ सी
विभोर मिली
और पूछने पर
कि ये क्या है बेटी
तो सदा
कोख सहलाते
वो चहकी
—दादी देखो
बच्चा
अँगूठा चूसते
फिर हिला
जब जब मिले
पौत्र हमिला
यही पाया
सिलसिला

३८ बच्चे बड़े करने हैं

तुमने मुझे
लाड़ेश कह कर
रिझाया

निज
नेह की आग में
सिझाया

और
इस तरह
तुमने
अपने
नेह की हवस को
मिटाया

और इसके बाद
सम्बधों को
क्या खूब
निभाया
कि . . कि . . .कि . .
जब मैं
अपना सर्वस्व त्याग
स्वयं को तुम्हें
सौंपने आया
तुम्हारे पास
तो तुमने
कितनी सहज अन्यमनस्कता से
कह दिया
कि
मैं
चला जाऊं
क्योंकि तुम्हें
अब अपने
बच्चे बड़े करने है

३९ किसी तरह जिन्दा हैं

अब हम
अपनी बहनों के घर
नही जाते

नाही
अपनों को
अपने यहां
कभी हैं
बुलाते

न
लोगों को
सुनते हैं
न
रिश्तों को हैं
निभाते

यहां तक कि
पति पत्नी भी
एक दूसरे को
सह नहीं पाते

हम
जी नहीं रहे
घिसट रहे हैं
जिन्दगी का
बोझ उठाते
बस समझ लो
मर नही पा रहे,
किसी तरह
जिन्दा हैं.

४० लोभ को नहीं कोई थोभ

"पता नहीं
लोग क्यों नहीं
घरों की तरह
अपने नगर को प्यार करते हैं ?"

नरेश मेहता (यदि मैं मेयर होता)

न ये शहर है
न ये गांव है
न ये स्वदेश है
न ये विदेश है
ये एक देश के नाम पर
क्षमायाचना है एक
परिवाद अशेष है

न इसकी अपनी
कोई संस्कृति है
न कोई सभ्यता है
न कोई सौम्यता है
न कोई भव्यता है
बस एक
उच्छृंखल नग्नता है
क्रूर निर्ममता है
जिसके होते

पहाड़
उलंग हो गये है
जंगल
अपंग हो गये हैं
और
ऋतुओं द्वारा
चाव से तराशी
सदियों से संभाली

चट्टानों की कितनी
अद्भुत कलाकृति
बारूद के धमाकों से
हो चिन्दी चिन्दी
बन रही
विकृत विस्मृति
साथ ही

लुटे है
गिलहरी के घर
टिटहरी के घोंसले
तेंदुओं की गुफाएं
भालुओं की कन्दरायें
चमगादड़ों के चैन बसेरे
बन्दरों के रैन बसेरे
और
कोटि–कोटि नील पद्म
नन्हें नन्हें
कीटों के साथ
न जाने
किन किन औरों के
जीवन
तभी तो
अन्तिम सांसें
ले रहा है
दम तोड़ता
ये मरता वन—

यहां
व्यवसाय के नाम पर
बेशर्म लूट है
हर अन्याय की

पूरी की पूरी
छूट है,
हर ओर
देवत्व के बावजूद
अपकर्म कूट कूट है

तभी तो
कुछ मनीषी कहते हैं
यहाँ से
अपकर्म हटाने का
हर त्रास
हर शोषण मिटाने का
एक ही तरीका है
कि यहाँ से
देवत्व ही हटा दो
पहाड़ों को
जंगल का
गौरव लौटा दो
इस तरह
वा रीत चला दो
कि फिर से
पेड़ झूमें
किरणों के नूपुर बाँध
जिनकी थिरकन से
चट्टानें गूँजें
वनदेवी को
सारी हवायें
आठों पहर पूजें
और
दसों दिशाओं में हर पल
साँसें परिमल को चूमे

बन्धु
यहाँ
हर एक को
जरूरत के लिये
सब कुछ है
भरपूर
पर किसी के
लोभ को
तनिक भी
असम्भव है
करना दूर

तभी तो
यहाँ की
गरीबों की हलाली से
जमीनों की दलाली से
सूदखोरों की जुगाली से
हो कर त्रस्त
हर एक दुःखी देहाती
उर में लिये कितना ही क्षोभ
टेर लगाता जाता है
—लोभ को नहीं कोई थोभ
रे बन्धु
लोभ को नहीं कोई थोभ

४१ तुम्हारे आने से

तुम्हारे ग्राने से

सूरज
देता है रंग रंग की लाली
चांद
किरणों से लबालब प्याली
सुबह देती है
ग्रोस से सजी हरी थाली
सांझ
महक मतवाली
ग्रौर रातें
सुन्दर सपनों को भेजती है
करने
नींदों की रखवाली
ग्रौर
कलम मेरी
टांक देती है
गीत, गजल डाली डाली
ग्रौर
पूरे जंगल में
फूलों की
गूंजती है किलकारी

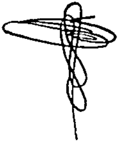
तुम्हारे ग्राने से.

४२ मैंने गर तुम्हें सुना

मैंने गर तुम्हें सुना
इसका मतलब
यह नहीं
कि तुम्हारी बातें मान ली हैं

इससे तो बस
तुम्हारी नियत जान ली है
और अब मुझे
क्या करना है
ये बात ठानली है

मैंने गर तुम्हें सुना
इसका मतलब
ये नहीं
कि तुम्हारी बातें मान ली हैं



४३ तुम्हारे कारण

तुम्हारे अनुज को
मधुमेह हुआ
और मैंने
सहानुभूति नहीं जताई
तो तुम्हें
बुरा क्यों लगा ?

तब
तुम्हारी संवेदना
कहाँ गई थी
जब
तुम्हारे कारण
तुम्हारे अनुज ने
मेरी
माँ-बहन की थी ?

तब
क्या हुआ था
तुम्हारी
नैतिकता को
उदारता को
प्रतिबद्धता को
जिनकी दुहाई दे
आज तुम मुझ से
खिन्न हो ?

तुम्हारे अनुज को
मधुमेह हुआ
और मैंने
सहानुभूति नहीं जताई
तो तुम्हें
बुरा क्यों लगा ?

४४ तुम धन्य हो

आंखों में
धूल है

बातों में
शूल है

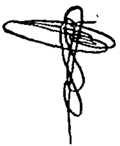
व्यवहार सारा
भूल है

तुम धन्य हो
तुम्हें
ये व्यवस्था
कबूल है.



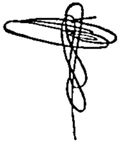
४५ मुझे पहली बार ये लगा

मुझे पहली बार ये लगा
कि
तुम अपना आकाश ले जाओ
इसमें दिन नहीं होता है रात नहीं आती है
कि
तुम अपनी जमीन भी ले जाओ
इसमें नागफणी भी उग नहीं पाती है
कि
तुम अपनी हवायें भी ले जाओ
इनमें आग भी जल नहीं पाती है
कि
तुम अपनी नदियाँ भी ले जाओ
इनमें मछलियाँ भी जी नहीं पाती हैं
कि
मुझे पहली बार ये लगा
कि तुम्हें मेरी याद नहीं आती है



४६ सपनों की ये दुनियाँ

हवा
पेड़
पानी
उत्सव
रंग
गुड़धानी
सपनों की ये दुनिया
कितनी
जानी
पहचानी
फिर भी
क्यों
लगती है
इतनी ये
म ।जानी



४७ तीता अस्त्र

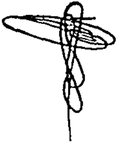
तू
चीज भले हो
मस्त मस्त

पर
जीवन इतना है
ग्रस्त व्यस्त

कि
हर दिन कर जाता
पूर्ण पस्त

और
रह जाता है
हर सपना

कुण्ठित
टूटा
तीता अस्त्र



४८ बहानों भरा फसाना होता है

मेरी बहन
जिस लड़के के पीछे दीवानी रही
उसने उसकी शादी में कितने ही
अटकाये रोड़े
पर उसने फिर भी ऐलान किया
कि गर उसका विवाह किसी और से किया
तो वो उसके साथ सोयेगी ही नहीं
पर उसका भी सारा नशा प्यार का
हो गया रफू चक्कर
जब पिताजी की अचानक
हो गई मौत
गुर्दों के फेल होने से
और वो
दहाड़ती ही रही
कि पापा को ले आओ कैसे भी ले आओ
कि वो जिससे भी कहेगें वो उससे ही
शादी कर लेगी
और जिस बात को मैं छिपाता रहा
उसी पर फिर बहस करने लगा
कि क्या
किसी के पिता की मौत
इसलिये भी होती है
कि उसकी सन्तान
उसकी इच्छा से
शादी नहीं करती है

तो फिर
झील में
वो दो प्रेमी ही क्यों डूब मरे
जिनके माता पिता ने

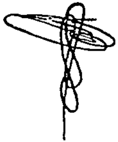
उन्हें शादी की इजाजत नही दी
क्यों नही उनके माता-पिता ही मरे ?

हम जाने
कितने डरे डरे
ऐसी
कितनी ही बातों से
आँखे चुराते रहते है
और
भूल जाते हैं
कि
जिस देश में
एक आयु के बाद
व्यक्ति
अपने मतदान से
देश का
भाग्य चुन सकता है
वो
अपने भविष्य को
अपनी इच्छा से
बुन नही सकता है—

इसका
ताना कोई देता है
बाना कोई देता है
और वो स्वयं
न मर पाने का
जीने का मात्र
बहानों भरा फसाना होता है

उन बहानों को
वो

प्यार का नाम देता है
या
खार का नाम देता है
या
अधिकार का नाम देता है
या
उधार का नाम देता है
या
मनुहार का नाम देता है
जिन सबके धर्म को निभाने के लिये
वो मर नही सकता
और यूँ डरता डरता
मर जाता है
सारी जिन्दगी
वो अपने साथ
यूँ अधर्म करता करता

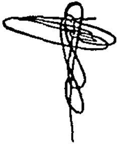


४९ किस बेचैन सब्र में

बात किनकी करूँ
उनकी
जो गैर थे
अपनापन लिये
या वो अपने
जिनके साथ
चूर चूर हो गये
सारे सपने

और वो
चैन से
चले गये
औरों की कब्रों में सोने
और मुझे
मिली
फुर्सत ही नही
सोने की
अपनी ही कब्र में

फिर भी पता नही
जिन्दगी कट रही
किस बेचैन सब्र में.



५० कितने हैं हम लाचार

प्यार में
इस नरक को
हम जीते रहेंगे

क्योंकि
इसके लिये
हम मर
इसे शहीद
कर सकते नहीं
इसलिये
इसके साथ जीते रहेंगे

क्योंकि
जितना नाटकीय है इसका विचार
जितना पीड़ामय है तुम्हारा व्यवहार
उतना स्वर्गिक है हमारा प्यार

इस द्वन्द्व में
न हम जी पा रहे हैं
न हम मर पा रहे हैं,
कितने है हम लाचार.

४१ नील शृंगाल

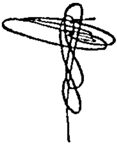
अब उनको
बेटी भागी है
कैसी विडम्बना
वो गोली
लौट उन्हें ही लगी
जो उन्होंने
सदा
औरों पर दागी है

कांच के घरों में
रहते हैं जो
वो
दूसरों के घरों पर
पत्थर नही फेंकते
ये जानते हुए भी
वे सदा से भूमते रहे
पता नहीं
किस मद के गैर में
रावण से झूलते रहे
और
निर्मम नृप की भांति
पैरों तले
सभी को रौंदते घूमते रहे
और
हर एक विरोध पर
विक्षिप्त श्वान से
गुर्राते घूरते रहे

और आज
जब बिन गाज

उनके मिट्टी के पैर
भुरभुरा कर बिखर गये

तो सभी
तसल्ली से
हँसते स्वयं पर
स्वयं से निरन्तर पूछ रहे
कि
नील शृंगाल से
क्यों सभी
खामोखां डरते रहे.



५२ जैसा खून होगा

जैसा खून होगा
वैसा प्रसून होगा,

जो अधिक खारा है ?
उसमें
अधिक नून होगा,

और जिसमें पानी नहीं
वो तो भाई सून होगा

५३ वैसा ही प्यार

ढ़ेरों परिचित हैं
जो मेरी माँ से
पौधे लगवाना चाहते हैं
विशेष कर तुलसी

कहते हैं कि
मेरी माँ के हाथों से लगाई
उनकी हर क्यारी
फूलती है
है फलती

और पूछने पर
माँ
सदा है कहती

कि कोई
जादू वादू नहीं बेटा
नाही है कोई चमत्कार
जिस दुलार से
तुझे
पाला है
पोसा है
इन पौधो को भी दिया है
वो ही प्यार

५४ एक व्यथा कथा

एक परी थी
एक राजकुमार था
और एक दिल . , . .

ठहरो !
परीकथायें बच्चों के लियें
होती हैं अच्छी
उनके लिये नहीं
जहां एक मदद आदमी होता हैं
एक मदद औरत होती है
और उनमें से एक
प्यार के सारे के सारे आधार को
आधार के सारे के सारे विश्वास को
तहस-नहस कर देता है
और उसके बाद उसमें
गर कुछ बाकी रहता है
तो वो होती है
बेसिर पैर की बहस एक

वहां नहीं हो सकती कोई
परी की कथा-वथा
वहां तो बस होती है
एक व्यथा कथा
जिसमें
एक भोगता है
दर्द टूटने का
और एक जीता है
शाप तोड़ने का

५५ पोर पोर से विष रिसता है

पवनी, पवना
सोहती, सजना
तवू, तन्दना
और न जाने कौन कौन ललना
वो स्वयं ही
भूल गया होगा उनके नाम
क्योंकि उसने
करवट की तरह
औरतें बदली

पर कुछ आखेट अपने
उसे अभी भी याद हैं
जैसे मीतू का बलात्कार
(जिसकी बलि चढ़ते सूअरों सी
बिलबिलाती चीत्कार
उसकी एड्रिलीन
चढ़ाती रही
उसका.
पाशविक खुमार
चढ़ाती रही)
सनसाइन होटल में
सामूहिक व्यभिचार
(भले ही जिसके कारण
जेल में बीते दिन दो चार)
और अपनी सहमी सहमी पत्नी का
संहार हर रात शनिवार
और फिर बिगड़े बच्चे की तरह
शराब की टाल की सुरक्षा में
ये बताना अपने बाप को ही

कि
एक बच्चे के बाद ही
बीबी
कितनी
हो जाती है पिलपिली
ढीली

और इस प्रकार
लिये कितने ही
विकृत विकार
खौफनाक आकार
उसकी हिम्मत
ढलते दिन की छाया सी
बढ़ती गई
कभी किसी न्याय के
बलि नहीं चढ़ी
दुष्टाई उसकी.

पिता पुत्र
दोनों ही
एक ही पथ के राही
दोनों ही
एक ही कर्म के सौदाई
और माँ ने भी
चोर की माँ की रीत
अक्षरशः निभाई
अपकर्मों की
सारी की सारी
जन्मघूँटी उसे
घोट घोट कर
ऐसी पिलाई
कि आज उसके

पोर पोर से
विप रिसता है
जब कि
साँप के तो
विप का
एक ही दाँत होता है.

आजकल यह आदमी
और भी ज्यादा शराब पीता है
मौत से और भी डरता हैं
और रोज नशे मे
चुपके से
टी. वी. के शोर में
चोरों सा घर मे घुसता है
एक तैयारी के साथ
उस नरक का सामना करने के लिये
जो इसके अपने
जहर के रिसने से
पैदा हुआ है
जिसके कारण
अब रोज
बोझिल रातों को ओढ़
पूरा नंगा हो जाता है
और तब
यह अपना चेहरा
वॉशबेसिन पर लगे शीशे में
ढूँढ़ता है
और जब उसे
वहाँ नहीं पाता है
तो हस्तमैथुन करता
डर जाता है

श्रौर हड़बड़ाकर
पसीने से लथपथ
उठ जाता है
फिर जब सो नही पाता है
तो ढेरों
नींद की गोलियाँ
गिटक जाता है
उसकी पत्नी ने
विधवा के पहन लिये है
परिधान
श्रौर
हर मुर्दा सुबह
श्रपने बच्चों को
स्कूल धकेलते हुए
हिकारत से देखती है
खर्राटे भरते पति को
ढूँढ़ती श्रपनी
प्रतिज्ञात
पहचान.

ऐसी उधेड़बुन में छोड़
पत्नी को
चल देता है वो
एक बासा दिन
भुगतने
श्रपनी लाश उठाये
चरमराते कंधों पर
खुद को ही छलने
श्रौर उन श्रावाजों से बचने
जिनमें गूँजती है गालियाँ
उसके नाजायज बच्चों की

श्रौर उन अबलाओं को
जो उन बच्चों को
बता भी नहीं सकती है
कि उनका बाप कौन है

श्रौर उसकी
बेवा सी जी रही पत्नी
दिनभर
जुगुप्सा से भर
खुद से ही
पूछती रहती है
कि उसकी औलाद का
वो बाप क्यों है.



५६ एक एम. सी. पी. का प्रलाप

बिस्तर पर मेरे
साथ मेरे
मेरी नौकरानी सोती है
जब भी
मेरी पत्नी
कहीं गई होती है

और जब वो
लौट आती है
और कहीं से
ये जान जाती है
तो वो
जार जार रोती है
चिल्लाती है
दहाड़ती है
छोड चले जाने की
देती है धमकियां

और जब
इस सब से वो
थक चूर चूर हो जाती है
तो मेरी इच्छा पर
मेरी नौकरानी की तरह ही
मेरी बगल में चुप सो जाती है—

मेरे बगैर
उसकी कोई पहचान नहीं है
आखिर उसका है ही क्या
अपना तो उसका
अपना नाम ही नहीं है

वो तो
खूँटे से बन्धी गाय है
वहीं तक जा सकती है
जितनी लम्बी रस्सी है
(मैं खूँटा हूँ
और रस्सी है
मेरी अनुमति)

उसे तो अब
तब तक
ऐसे ही रहना होगा
जब तक उसकी
फिर नहीं जाती मति
तब उसे
पागल करार कर
उसे मैं
तसल्ली से छोड़ दूँगा
कुत्ते की तरह बदनाम दे
हर रिश्ता तोड़ दूँगा

और वो
जीते जी
यूँ ही मर जायेगी

यही तो उसे डर है
जिसके होते
जब भी वो मुझे छोड़
भाग कहीं जायेगी
तब अपनों से क्या
क्या गैरों से
खुद से ही डर
घुटनों के बल
रेंगती लौट आयेगी

आखिर
पाँव पोश का सम्मान
तभी तक है
जब तक
पाँव उस पर पोंछे जायें
और
जूती का मान
तभी तक है
जब तक
पाँवों को वो शोभा बढ़ायें

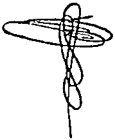


४७ मेरा हो जाना

मैंने
झूठ कहा था
कि मैं तुम तक
आना नहीं चाहता,

मैंने
झूठ कहा था
कि मैं तुम्हें
पाना नहीं चाहता—

तुम्हे चाहते हुए
तुम तक आना
तुम्हें पाना
और यूँ
तुम तक पहुँच
तुम्हें पा
तुम में विलीन हो जाना
सदा के लिये
तुममें खो जाना
होगा
मेरा हो जाना



५८ बुढ़ापे के धरातल में

उस मोहल्ले में
कूड़े का एक बाड़ा है
पास ही उसके
निठल्लों का अखाड़ा है

जिसमें
हर वर्ग के चुने हुए
निठल्ले
ताश पीटते हैं
खुद को हार
सोचते हैं
ऊब को जीतते हैं

पर ऊब बूढ़ी होती नहीं

पर वो निठल्ले ही
अपनों में से
किसी ना किसी के
तीये पर ही नहीं
तेरवें पर भी जाते हैं
अखाड़े की सेहत के लिये
तेरवें के जीमण पर
ऊब तक खाते हैं
और तब यूं
बचपन से लुढ़क
बुढ़ापे के धरातल में
जवानी के सपने
देखते रह जाते हैं

५९ मेरा धोखा पकड़ा न जाये

दसों सालों से
डाक्टरों ने
मुझे कहा है
कि मेरा रोग मुझे
जल्द ही मार देगा
इस बात का प्रचार
मैं गिड़गिड़ाता करता हूँ
इस प्रकार
सबका भयादोहन करता
जिसके अन्तर्गत
सबकी भावनायें हरता हूँ
सीजरीय कायर सा
मौत के पहले कई बार मरता हूँ
और निरन्तर इस बात से डरता हूँ कि
मेरा धोखा पकड़ा न जाये

इसलिये मैंने
अपने बच्चों को
अपनी कला में माहिर कर दिया है
कैसे सरकारी अफसरों को
लिफाफे में बन्द करते है
सिखा दिया है
और सिखा दिया है
कि मैथुन से कहीं ज्यादा
तात्विक है
पैसा
जिसकी
न कोई गंध होती है
न कोई रंग होता है
जो भी होता है

जैसा भी होता है
पैसा बस पैसा होता है
और दुनिया में
जो कुछ भी होता है
सब
पैसे से ही होता है

इसलिये कहता हूँ
मेरे बच्चो
वो सब बुरा होता है
जो पैसा नहीं होता है
तभी तो कहते हैं
कि गर स्त्री का सुहाग पति है
तो पैसा मर्द का सुहाग होता है
तभी तो होरेस ने भी कहा था
कि
सही तरीके से हो तो सही
वर्ना
पैसा बनाओ किसी तरीके से सही



६० लालू लँगड़ा

लालू लँगड़ा
पटिया गाड़ी पर
हाथों से पैडल से
उड़ता जाता है

ढलानों पर
दौड़ा जाता है
चढ़ानों पर
चढ़ता जाता है

लालू लँगड़ा
पटिया गाड़ी पर
हाथों के पैडल से
उड़ता जाता है.

इसके पास
पुलिस मुखबिरों से
ज्यादा पुख्ता
ज्यादा खबर है
और पुलिस से भी कहीं ज्यादा
इसके आँख–कान
चौकन्ने है—

इसे पता है
कि नगरपालिका के
किस अध्यक्ष ने
किसे साथ ले
किस होटल में
किस पर्यटक की पत्नी को
किस तरह लूटा,

इसे पता है
किस बाबा की गुफा में
चरस मिलता है
किस मन्दिर में
विदेशियों के लिये
कैसा चकला चलता है,

इसे पता है
कि किस आदमी का
किस औरत से
काँटा अटका है,
किस बनिये को
किस हरिजन की बेटी का
क्यों चाँटा लगा है,

इसे पता है
कि कौन सा डाक्टर
पानी के इन्जेक्शन लगाता है
सैम्पल की दवाइयाँ बेचता है
और मर्दानगी की दवाई के नाम पर
लोगों को बेवकूफ कैसे बनाता है,

इसे पता है
कौन मास्टर
कितने ट्यूशन पढ़ाता है
और परीक्षा के पत्र बेच
तनख्वा से भी ज्यादा
किस तरह कमाता है,

इसे पता है
कि जज साहब को
औरत का
कौनसा रंग भाता है

कौन सा पुलिस वाला
किससे कितना हफ्ता पाता है
और आई. टी. ओ.
किससे कितनी घूस खाता है,

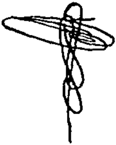
इसे पता है
कि कस्बे में
कौन बिन खाये
सोता है
कौन किसके
जुल्मों से घबरा
रोता है
और कौनसा 'बापू'
किस किस में
किस किस तरह
पाप धोता है,

इसे पता है
कि झील कहाँ से टूटी है
जहाँ से सैप्टिक टैंकों का पानी
उसमें आता है
उसका यूँ गंदा हुआ पानी पी
किस किस की किस्मत
कैसे फूटी है
और उसके
आस पास के जंगलों में
किसने किसकी
कैसे इज्जत लूटी है,

पर इतना सब जानने से
होता क्या है,
यही ना
कि वो
इतनी सारी जानकारी के

बोझ से दबा जाता है
पाँव न होने के कारण
और भी
इसलिये
थक
औन्धा हो
पटिया गाड़ी पर
बैठा बैठा
सुस्ताता है,
कार, स्कूटर, साइकिल वालों की
जब मोटी गाली खाता है
लालू लंगड़ा
पटिया गाड़ी पर
हाथों के पैडल से
उड़ता जाता है

ढलानों पर
दौड़ा जाता है
चढ़ानों पर
चढ़ता जाता है
लालू लँगड़ा
पटिया गाड़ी पर
हाथों के पैडल से
उड़ता जाता है



८१ मौसम की खबर

पेड़
या तो
लोगों के शरीर में
गर्मास बन कर खो गये हैं
या फिर
आग बन कर
सदा के लिये सो गये हैं

परख नलियों में तैयार किये फूल
उन बार बार बदले नये नौकरो की तरह हैं
जो अपने मालिकों को ही नही पहचानते
और इसके पहले
कोई पहचान-बहचान की बात हो
बदल दिये जाते हैं

पांखी
अब इन वादियों का
रास्ता भूल गये है
तितलियो के जूथ के जूथ
या तो कापियों में दब गये है
या फिर शोकेसों के
कांच में कैद हैं

अब भला
मौसम की खबर
कोई ले, दे तो कैसे
इसका दायित्व तो लगता है
सिमट कर
परिधानों के कंधों पर आ पड़ा है
अब वे बतायें तो बतायें
या चाहे न बतायें
मौसम कौन सा है

६२ रसोई से महकते स्वाद से

माँ
बहुत खिन्न है
कि आजकल
रसोई की कोई पहचान नहीं

बताती है
कि घी तेल में
कोई महक नहीं,
प्याज हो चाहे मिर्च
किसी की
कोई चहक नहीं,
नींबू में
खट्टास नहीं,
लहसुन में
वास नहीं,
टमाटर में
उजास नहीं,
गाजर में
मिठास नहीं,

मरो रे
ये भी कोई खाना है
मरा
कैसा ये जमाना है

फिर बताती है
याद कर वो अपने दिन

कि
मोहल्ले से गुजर जाओ
तो जान जाओ
रसोई से महकते स्वाद से
कि ये घर किसका है.

६३ अब जो भी युद्ध होगा

तुमने तसल्ली नहीं
विश्वासों की आकाशगंगा
दी मुझे
कि तुम्हारा
कोई भी अपना
हमारे बीच
कभी नही आयेगा
यहां तक
कि तुम्हारी सन्तति भी नही

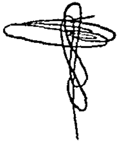
और ये सब
तुमने
ऐसे ही नहीं कहा था
मुहर्रमी ठोक ठोक छाती अपनी
यही दोहराया था तुमने
कि तुम्हारा कोई भी अपना
हमारे बीच
कभी नही आयेगा
यहाँ तक कि
तुम्हारी सन्तति भी
और कोई आया भी तो
मुँह की खायेगा
खाक में मिल जायेगा—

युद्ध की दुन्दुभी गूँजी
आक्रमण
हर ओर से
हर आयुध के
हुए
और तब

ज्ञात हुआ मुझे
कि
बीच युद्ध के
मैं अकेला था
दूर दूर तक
तुम्हारा कहीं
नामोनिशान नहीं था
और मेरे सारे हथियार
तुम्हारे पास थे.
घायल मैं
अभिमन्यु की तरह
चक्रव्यूह में
खेत नहीं हुआ
फिर कभी
लड़ने के लिये
व्यूह तोड़
निकल तो आया
पर क्या
आसमान से विराट
धरती से उदार
तुम्हारे सारे के सारे
विश्वासों की आकाशगंगा का
स्वरूप
तनिक भी समझ पाया
और क्या
समझ पाया
कि क्या मैं छला गया
या
सब जानते हुए भी
स्वयं को
छला जाने दिया—

किसी भी युद्ध में
बिन तैयारी जाना
और बिन बात मर जाना
गौरव तो नहीं
और नाही यह गौरव है
कि किसी के भरोसे
अपनी लड़ाई सौंप
खुद सो जाना,

अंततः
हर कोई
अपनी साँसे खुद लेता है
और चाहने पर भी
किसी के भरोसे
ऐसा कुछ नही होता है
अब जो भी युद्ध होगा
उसमें तुम्हारे
सारे के सारे
विश्वासों की आकाशगंगा
यथावत् होगी
पर जो नहीं होगा
वो होगा
उस पर
कैसा भी विश्वास !



६४ एक जानदार लुत्फ़

जब जब
जिस असुविधा की
सरकारी अफसरों से
की शिकायत
तो वो सुविधा लुप्त
हो गई

और इस तरह
धीरे धीरे
शिकायत करने की
कैसी भी चाह
पहले सुप्त
हो गई
और फिर
मर
सदा के लिये खो गई

उस हाईकू में
कवि ने
यही तो कहा था
कि
झोंपड़ा खाक हुआ तो
चाँद और साफ दिखा
हाँ वही अंदाज है
आज
न शिकायत है कोई
न कोई असुविधा
बल्कि
बिना किसी सुविधा
जिन्दगी
एक जानदार लुत्फ़
हो गई.

६५ परिचय पत्र

(केवल दीमक लगे लोगों के लिये)

1 नाम—हैवान प्रकाश
2 पिता का नाम—काम विलास
3 उम्र—सत्तर अस्सी के आस पास
4 वैवाहिक स्तर—पति, पत्नी और संत्रास
5 परिवार—बच्चे और उनके बच्चों का बिखराव का ह्रास
6 पता—शैतानों का वास
7 शिक्षा—मिडल पास का व्यर्थ प्रयास
8 शौक—पीना शराब बेतहाश
9 काम—जिस तिस को पहुँचाना त्रास
10 योग्यता—हर निरीह का शोषण कर करना उसका सत्यानाश
11 आकांक्षा—बच्चों के बच्चों से पहले रखैल से विवाह की तिक्त उचास



६६ कविता

कविता
तूने मुझे
वो सब दिखाया
जो
देखा
और
दिखा
के बीच
खो गया

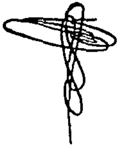
कविता

तूने मुझे
वो भी बताया
जो
दो
धड़कनों के बीच
दो
साँसों के बीच
और
बीच उथल-पुथल के
रक्तचाप की
हो गया
और
दौड़ता मन
उसे पकड़ न सका—

कविता

तूने मुझे
वो सब दिखाया

जो
देखा
और
दिखा
के बीच
खो गया





डॉ० अरुण शर्मा

जन्म : 22 अगस्त 1950, जोधपुर (राजस्थान)

शिक्षा : राजस्थान, कलकत्ता, बम्बई

सम्प्रति : निजी चिकित्सालय, आबू पर्वत

साहित्य सृजन : हिन्दी में कविता, कहानी व नाटक विधाओं में रचनारत । बंगला और अंग्रेजी में काव्य रचनाएं । अंग्रेजी में 'इन सर्च ऑफ ए सौंग', 'टेराकोट्टा सूत्राज' और हिन्दी में 'चुप क्यों हो कोई बात करो', 'बसंत बेहोश हो जाता है' शीर्षक काव्य-संग्रह प्रकाशित ।

सम्पर्क : डॉ. अरुण शर्मा
एकान्त, शिवाजी मार्ग
आबू पर्वत – 307 501 (राजस्थान)
दूरभाष : 02974 - 3377, 38603
फैक्स : 02974 - 3515